(3)

R.N.I. No. U.P.HIN/2002/6271

ISSN 0974-553 X

वर्ष - १०
अंक - ३७

शिक्षा चिंतन

शैक्षिक त्रैमासिक
शोध पत्रिका

त्रिमूर्ति संस्थान
कानपुर

जनवरी-मार्च २०११

अनुक्रम

पृष्ठ सं.

सम्पादकीय २

आगरा शहर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन

- डॉ. प्रवीन देवगन ३-८

उच्च शिक्षा में गुणात्मकता : राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ९-१२

- डॉ. अलका कटियार, डॉ. प्रतिभा वर्मा

शिक्षक सशक्तिकरण -डॉ. उमा टंडन, डॉ. गीता डुडेजा १३-१७

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विकलांग छात्रों की समस्याओं एवं आकांक्षाओं का अध्ययन

-डॉ. पी.एस. त्यागी, मनीषा पाराशर १८-२२

पहली अप्रैल से लागू शिक्षा अधिकार अधिनियम २००९ की चुनौतियां २३-२६

- डॉ. रश्मि श्रीवास्तव

निम्न एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के समाज में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता २७-३४

- डॉ. अमित मित्तल

राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा की प्रगति ३५-३८

- डॉ. विष्णु कुमार, मनीषा कुमारी विजय

स्ववित्त पोषित तथा अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान विषय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन ३९-४३

- कायनात आज़मी, दीप्ति सक्सेना

राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा की प्रगति : एक अध्ययन

—डॉ. विष्णु कुमार*

—मनीषा कुमारी विजय**

प्रस्तावना :

जहां तक वैज्ञानिक शोध का उद्देश्य स्थापित सत्यापित या सत्यापनीय सामान्य नियमों का व्युत्पन्न करना है, एक शैक्षिक अनुसंधानकर्ता को अपने प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्षों में सभी तथ्यों का सार सम्मिलित हो जाये, जिनका अध्ययन शोधकर्त्री ने विभिन्न अध्ययनों के अन्तर्गत किया है।

एक उत्तम शोधकार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है, कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित आंकड़ों पर आधारित होते हैं। उन पर शोधकर्ता की व्यक्तिगत धारणाएं एवं अनुमानों का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा की प्रगति का अध्ययन करना था।

प्रस्तुत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोधकर्त्री ने सामान्य प्रतिशत का प्रयोग करके परिकल्पनाओं को स्वीकृत एवं अस्वीकृत किया है।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने अपने व्यापक दृष्टिकोण, तर्कसंगत विचार, एवं तीक्ष्ण विश्लेषण व विवेचना के आधार पर कुछ निष्कर्ष दिये हैं, साथ ही शोधकर्त्री ने कुछ सुझाव देने का भी प्रयास किया है।

शोध की भूमिका :

किसी भी राष्ट्र के उज्जवल भविष्य एवं आर्थिक, सामाजिक विकास का दायित्व वहां की शिक्षा व्यवस्था पर होता है। शिक्षा ज्ञान के प्रसार के साथ किसी भी राष्ट्र की प्रगति की निर्धारक भी होती है। आज के यांत्रिक युग एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था से एकीकरण के लिए उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता है क्योंकि आज अभियांत्रिकी प्रबन्धन, कम्प्यूटर एवं औद्योगिक प्रशिक्षण ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बिना किसी राष्ट्र की प्रगति कभी भी पूर्ण या बहुआयामी नहीं हो सकती

* सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राजस्थान)

** शोधकर्त्री

और ये सभी क्षेत्र तकनीकी शिक्षा के अन्तर्गत आते हैं। इसलिये प्रो. हुमायू कबीर ने कहा है कि–

"किसी देश अथवा राष्ट्र की समुन्नति एवं सुदृढ़ता का आधार विज्ञान एवं प्राविधिक विषयों की शिक्षा है। यदि यह शिक्षा प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है तो उस देश की प्रगति भी आवश्यम्भावी है।"

समस्या का औचित्य :–

प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा पर सरकार द्वारा किये गये कार्यों एवं इससे सम्बन्धित उपलब्धियों का पता लगाना है।

भारत में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत जहां अकादमिक शिक्षा को अपनाया गया है वहीं व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा को भी महत्व दिया गया है। अतः शोधकर्त्री ने "राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा की प्रगति" समस्या का चयन अपने शोध कार्य हेतु किया।

समस्या कथन :

"राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा की प्रगति–एक अध्ययन।"

पंचवर्षीय योजनाएं :

भारतीय सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा मार्च, 1950 में एक योजना आयोग का गठन किया गया। इस आयोग द्वारा 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना के निर्माण के साथ भारत में आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया औपचारिक रूप से प्रारम्भ हुई। तब से अब तक 10 पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण कर उन्हें संचालित किया गया है। इस 55 वर्ष की अवधि में कुल मिलाकर वर्ष 1966–69, 1978–79 व 1990–92 छः वर्ष ऐसे भी रहे हैं जब कुछ विषम आर्थिक–राजनीतिक परिस्थितियों वश पंचवर्षीय योजनाएं क्रियान्वित नहीं की जा सकी हैं।

तकनीकी शिक्षा :–

तकनीकी शिक्षा वह है जो व्यक्ति को नये आविष्कारों एवं तकनीकी का ज्ञान प्रदान करती है और यह ज्ञान उसके द्वारा स्वयं के एवं राष्ट्र के हित में प्रयोग किया जाता है।

राजस्थान में तकनीकी शिक्षा :

वर्तमान में तकनीकी शिक्षा के लिए राजस्थान में काफी प्रयास हुए हैं, जो विभिन्न भागों में विभाजित है–

1. इन्जीनियरिंग कॉलेज
2. आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान)
3. पॉलिटेक्निक शिक्षा

समस्या से उभरने वाले प्रश्न :

1. क्या राजस्थान की पंचवर्षीय योजनाओं में तकनीकी शिक्षा पर पर्याप्त व्यय हो रहा है?
2. क्या राजस्थान की पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा आवंटित राशि का सही वितरण हो रहा है?
3. क्या राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा में इन्जीनियरिंग क्षेत्र के लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है?
4. क्या राजस्थान की दसवीं योजना में तकनीकी शिक्षा में पॉलिटेक्निक क्षेत्र के लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है?
5. क्या राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी में आईटीआई क्षेत्र के लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया था?

शोध के उद्देश्य :–

कार्य करने से पूर्व उसके उद्देश्यों का निर्धारण

आवश्यक है, नहीं तो कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकता है और समाज या अन्य दृष्टिकोण से लाभदायक नहीं हो सकता है। बिना उद्देश्य को निर्धारित करे लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। समस्या के अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा पर किये जाने वाले प्रस्तावित कार्यों का अध्ययन करना।
2. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा पर किये जाने वाले प्रस्तावित कार्यों की क्रियान्विति की स्थिति का पता लगाना।
3. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के इन्जीनियरिंग क्षेत्र में हुए व्यय का अध्ययन करना।
4. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के पॉलिटेक्निक क्षेत्र में हुए व्यय का अध्ययन करना।
5. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के आईटीआई क्षेत्र में हुए व्यय का अध्ययन करना।

उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्ष :–

1. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में भवन निर्माण कार्य, मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का उपलब्ध करवाना, कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट सुविधाओं का विकास करना, पुस्तकालय व्यवस्था का उचित विकास करना, महिलाओं एवं विकलांगों के लिए नये संस्थान खोलना जैसे कार्य प्रस्तावित किये गये थे।
2. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में जो कार्य प्रस्तावित किये गये उनमें से लगभग आधे कार्यों की ही क्रियान्विति हो पायी है, क्योंकि सम्बद्ध संस्थान अपने बजट का पूरा उपयोग नहीं कर सके।
3. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के इन्जीनियरिंग क्षेत्र पर कुल व्यय 1098.46 लाख रुपये किया गया।
4. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के पॉलिटेक्निक क्षेत्र पर कुल व्यय 3618.67 लाख रुपये किया गया।
5. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के आईटीआई क्षेत्र पर कुल व्यय 2588.54 लाख रुपये किया गया।

शोध की परिकल्पनाएं :

1. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के इन्जीनियरिंग क्षेत्र में प्रस्तावित बजट एवं व्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के पॉलिटेक्निक क्षेत्र में प्रस्तावित बजट एवं व्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाय जाता है।
3. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा के आईटीआई क्षेत्र में प्रस्तावित बजट एवं व्यय में कोई साथ सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पनाओं से सम्बन्धित निष्कर्ष :

1. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में इन्जीनियरिंग क्षेत्र में प्रस्तावित बजट 1654.90 लाख रुपये एवं व्यय 1098.46 लाख रुपये रहा। इस प्रकार बजट एवं व्यय में लगभग 33.61 प्रतिशत का अन्तर रहा। अतः कहा जा सकता है, कि इस क्षेत्र में

बजट एवं व्यय में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

2. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में पॉलिटेक्निक क्षेत्र में प्रस्तावित बजट 5575.50 लाख रुपये एवं व्यय 3618.67 लाख रुपये रहा। इस प्रकार बजट एवं व्यय में लगभग 35.10 प्रतिशत का अन्तर रहा। अतः कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में बजट एवं व्यय में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में आईटीआई क्षेत्र में प्रस्तावित बजट 4105.70 लाख रुपये एवं व्यय 2588.54 लाख रुपये रहा। इस प्रकार बजट एवं व्यय में लगभग 40 प्रतिशत का अन्तर रहा। अतः कहा जा सकता है, कि इस क्षेत्र में बजट एवं व्यय में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

स्रोत एवं दत्त संकलन :

- राजस्थान सचिवालय, जयपुर।
- योजना भवन, जयपुर।
- राजस्थान प्राविधिक शिक्षा निदेशालय, जोधपुर
- विकास अध्ययन केन्द्र, जयपुर

इस प्रकार उपयुक्त स्रोतों से दत्त संकलन एवं विश्लेषण के माध्यम से परिणाम तथा निष्कर्ष निकाला गया।

समस्या का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध में तकनीकी शिक्षा का अध्ययन केवल राजस्थान के संदर्भ में किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध केवल दसवीं पंचवर्षीय योजना तक सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध तकनीकी शिक्षा के निम्नांकित क्षेत्रों के अध्ययन तक सीमित है।

- इन्जीनियरिंग शिक्षा
- पॉलिटेक्निक शिक्षा
- आईटीआई शिक्षा।

भावी शोध हेतु सुझाव :

1. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा पर किये जा रहे व्यय एवं उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
2. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में स्त्री शिक्षा पर किये जा रहे व्यय एवं उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
3. राजस्थान की दसवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर किये जा रहे व्यय एवं उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1– "ड्राफ्ट टेन्थ फाइव ईयर प्लान" (2002–2007), मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (1986), गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया

2– उपाध्याय, प्रतिभा (2003), भारतीय शिक्षा की उदीयमान प्रवृत्तियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

3– प्रतियोगिता दर्पण, अगस्त 2006, महेन्द्र जैन, उपकार प्रकाशन।

4– कुरूक्षेत्र (अगस्त 2007), अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा. लि. नई दिल्ली।

तुलसी को प्रणाम

वन्दन है गुरू गौरि गणेश का, देवि इला विमला को प्रणाम है।
वन्दन बन्धु समेत है राम का, मैथिली को, मिथिला को प्रणाम है।
वन्दन पावन गाथ का है, सरयू तट की अचला को प्रणाम है।
वन्दन में हुलसी है गिरा, हुलसी तुलसी की कला को प्रणाम है।।

● ● ●

चन्दन सी अति पावन है, मन भावन है जिसकी शुचि गाथा।
ज्ञान तमारि से कर्म की देह में भक्ति का पंकज शुभ्र खिला था।
पाकर राम कृपा जसने अनुरक्ति–विरक्ति का स्वाद चखा था।
भाव भरे हुलसी सुत के चरणों पर विश्व झुका रहा माथा।।

● ● ●

गायक भारत–भारती के बड़े, रक्षक हिन्दु समाज के हैं।
नूतन दृष्टि – प्रदायक रूप सनातन रीति–रिवाज के हैं।
श्री तुलसी तुलसी से पवित्र, विवर्धक मूल के ब्याज के हैं।
थे जितने कल प्रेरक वे, उतने ही भविष्य के, आज के हैं।।

● ● ●

साधन अन्तर–स्वच्छता का दिया, कृत्रिमता पतिता कर दण्डित।
शुद्ध–प्रबुद्ध, बना जग जीवन, क्रूर कुतर्क की बुद्धि विखण्डित।
उर्वर भावना दिव्य त्रिलोक दे ज्ञान–प्रभा–प्रतिभा अभिमण्डित।
है न हुआ, नहीं होगा कभी, जग में तुलसी सा महाकवि पण्डित।।

–डॉ. गणेशदत्त सारस्वत

Published by : Mrs. Kamla Shukla
Editor : Prof. R. S. Shukla
Office address : 1228, Y- Block, Kidwai Nagar, Kanpur- 208 001